

**सर्वश्री वि.** (तत्.) एक आदर सूचक विशेषण जो अनेक लोगों के नामों का उल्लेख करने पर सब के साथ अलग-अलग श्री न लगाकर पहले नाम के प्रारंभ में सर्वश्री जोड़ दिया जाता है।

**सर्वश्रेष्ठ वि.** (तत्.) सबसे उत्तम, सब से बढकर, सब से बड़ा।

**सर्वसंहार पुं.** (तत्.) 1. ऐसा संहार जिसमें कुछ भी न बचे, कोई न बचे 2. सर्व संहारक अर्थात् काल।

**सर्वस पुं.** (तद्.) सर्वस्व, सब कुछ।

**सर्वसख्य वि.** (तत्.) 1. जगत सखा, जो सबका सखा हो 2. जो सभी के साथ हिल-मिल जाता हो, सभी के साथ सख्य भाव रखने वाला।

**सर्वसत्ता स्त्री.** (तत्.) किसी कार्य या विषय से संबंध रखने वाली सब प्रकार की सत्तायें या अधिकार। सर्व सत्ताक।

**सर्वसम वि.** (तत्.) पूर्णतः समान, बिल्कुल एक जैसा, सर्वथा अनुरूप, समरूप।

**सर्वसमावेशी वि.** (तत्.) 1. सभी को सम्मिलित करने वाला, सभी को आदर के साथ अपनाने वाला 2. सबको सम्मिलित करने के बाद जैसे सभी कर सम्मिलित करने के बाद।

**सर्वसमिका स्त्री.** (तत्.) पूर्ण समानता, तादात्म्य, बीजगणित समता का कोई कथन जो किसी भी प्रयुक्त प्रतीक के प्रत्येक निश्चित मान के लिए सत्य बना रहता है, सर्वसमिका का चिह्न '=' है।

**सर्वसम्मति वि.** (तत्.) जो सबकी सम्मति या स्वीकृति से हुआ हो, जिस कार्य के लिए सभी की सहमति हो।

**सर्वसम्मति स्त्री.** (तत्.) सभी की एक राय, सभी की सहमति।

**सर्वसर पुं.** (फा.) एक प्रकार का रोग जिसमें मुंह में छाले से पड़ जाते हैं और खुजली तथा पीड़ा भी होती है।

**सर्वसह वि.** (तत्.) सब कुछ सहन करने वाला, परमात्मा, ईश्वर।

**सर्वसहा स्त्री.** (तत्.) सब का बोझ सहन करने वाली अर्थात् पृथ्वी, सभी को सहन करने वाली।

**सर्वसाक्षी वि.** (तत्.) जो प्रत्येक कार्य का प्रत्यक्ष गवाह हो, जिसके सामने सब कुछ होता है 1. परमेश्वर, परब्रह्म 2. वायु 3. अग्नि।

**सर्वसाधन वि.** (तत्.) 1. सभी कार्यों का साधन 2. सभी कार्यों को सिद्ध कर सकने वाला पुं. 1. परमेश्वर 2. धन, सुवर्ण।

**सर्वसाधारण वि.** (तत्.) सर्वसामान्य, सबके लिए सुलभ, सार्वजनिक पुं. जनसामान्य, सभी लोग जैसे- यह योजना सर्वसाधारण के लिए है।

**सर्वसामान्य वि.** (तत्.) जो सर्वत्र पाया जाए, सर्वसुलभ, सबमें समान रूप से प्राप्य पुं. दे. 'सर्वसाधारण'।

**सर्वसिद्ध वि.स्त्री.** (तत्.) सभी कार्य सिद्ध करने वाली, सभी सिद्धियाँ देने वाली।

**सर्वसिद्धि स्त्री.** (तत्.) सभी कार्यों में सफलता।

**सर्वसुलभ वि.** (तत्.) सर्वत्र सुलभ, सभी व्यक्तियों के लिए सरलता से प्राप्य।

**सर्वसोख वि.** (तत्.+तद्.) सब कुछ सोख लेने वाला, सर्वशोषक, सर्वशोषी।

**सर्वस्तोम वि.** (तत्.) 1. सभी के द्वारा प्रशस्त या प्रशंसित पुं. 1. सभी प्रकार के यज्ञों की आहुतियाँ 2. सभी प्रकार की वस्तुओं का समूह या संग्रह 3. सभी प्रकार के स्तोमों का संग्रह दे. 'स्तोम'।

**सर्वस्व पुं.** (तत्.) (किसी का) सब कुछ, सभी प्रकार की संपत्तियाँ जैसे- इस बाढ़ ने तो गाँव वालों का सर्वस्व छीन लिया।

**सर्वस्वसंधि स्त्री.** (तत्.) बदले में अपना सर्वस्व देकर की जानी वाली संधि।

**सर्वस्वाहा स्त्री.** (तत्.) अपना सब कुछ अग्नि को समर्पित कर देने का भाव या क्रिया।

**सर्वस्वी पुं.** (तत्.) 1. ऐसी वर्णसंकर संतान जिसका पिता नाई और माता ग्वालिन हो 2. एक विशेष जाति।